अजय चन्द्रवंशी की कविताएँ

कवर्धा (छ. ग.)
9893728320

बहस

तुम्हारा सच वह है
जो तुम मानते हो

मेरा सच वह है
जो मै मानता हूँ

और हमारा सच!!
कुछ भी नही.

दर्द

मेरे दिल में उठा
मैंने ही महसूस किया
मै ही तड़पा
मुझी से ख़त्म हुआ.

माया

उसने कहा दुनिया झूंठी है
मैंने मान लिया
उसने कहा रिश्ते झूंठे है
मैंने मान लिया
उसने कहा यंहा सब झूंठ है
मैंने मान लिया
मैंने कहा आपकी बांते भी झूठी है
उसने नही मानी.

सच्चे वीर

वे सच्चे वीर थे
उन्होंने
केवल पुरुषो की
हत्या की
स्त्रियों और बच्चों को
छोड़ दिया.

सत्यवादी

वह हमेशा
सच बोलता है
इसलिए
कभी बोलता नही.

आलिंगन

उसने गले लगाया
मैं सहमा नही
चीखा!!

ज़मीन

यह ज़मीन जिसमे
हम बरसों से रहते आये हैं
सिर्फ कागज़ का एक टुकड़ा
जिसे तुम दस्तावेज़ कहते हो,

में हमारा नाम न होने से
तुम्हारी कैसे हो जाएगी?

और जो यहां के ज़र्रे-ज़र्रे में
हमारे पूर्वजों के निशान हैं
क्या वे सबूत नही हैं
क्या कागज़ का एक टुकड़ा
हजारों जिंदगियों पर भारी है?
यदि ऐसा है, तो ऐसा क्यूँ है?

एक कवि

वह
मंच पर
दहाड़ता है
और ज़मीन पर
हाँफता है.

प्रतिबद्धता

एक होड़ सी मची है
कौन किससे ज्यादा देशभक्त है
या कि क्रांतिकारी
यह कैसी प्रतिबद्धता है
जिसकी घोषणा रोज करनी पड़ती है!
यह दौर होने से ज्यादा दिखने का है
ठीक उसी वक्त
जब वे अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा
करते रहते हैं
मेरे मोहल्ले में सब्जी बेचने वाले,
खेत जाने वाले किसान, चाय बेचने वाले,
बाजार जाने वाले मजदूर
स्कूल जाने वाले शिक्षक
जल्दी में होते हैं,
माफ़ कीजियेगा
इस भागमभाग में
वे आपकी घोषणाएं सुन नही पाते

क्रांति

वह
सब को
गाली देता है
व्यवस्था को
समाज को
ख़ुद को भी
उसके लिये
गाली ही क्रांति है

आत्मा की आवाज़

आत्माएं उसी समय आवाज़
करती हैं
जब कुछ फ़ायदा हो
आत्माएं अवसर पहचानती हैं
वे दुनिया को बेहतर जानती हैं

देशभक्त

वह देशभक्त है
इसलिए कुछ नही करता
सिवाय देशभक्ति के
मसलन
स्कूल में पढ़ाना
या बाज़ार से सब्जी लाना
उसे लगता है
उसका समय नष्ट हो रहा है
इन व्यर्थ के कामो से
वह चाहता है
डूबा रहे हमेशा गहन चिंतन में
देश के उद्धार के!
उसे अजीब लगता है
ठेला पेलना
सब्जी बेचना या
खेत में काम करना
यह भी कोई देशभक्ति है!
उसे चिढ़ होती है
उन लोगो से
जो रात-दिन महज
रोजी-रोटी की सोचते हैं
जबकि दुश्मन सीमा के क़रीब है
कहां तो उसे रात-भर नींद नही आती
और वे बर्बाद फसल का रोना रोते हैं
वह बेचैन रहता है,

चिड़चिड़ाता है
कोई समझ नही पा रहा
उसके महान उद्देश्य को!

अनुयायी

गलत यह नही कि
तुम चलते हो
उसके बताये रास्ते पर

गलत यह है कि
तुम सिर्फ चलते हो
देखते नही

झूठा सच

वह बहस मे
जोर से बोलता है

लगभग चीखता है

लोग चुप रहते हैं
लिहाज में
या कभी खत्म न होने वाली
बहस से बचने के लिए

इस तरह
उसका झूठ सच हो जाता है.

खुद्दार

वह रोज ऐलान करता है
वह बिका नहीं है
और इस तरह
रोज़ बेचता है
अपने 'न बिकने को'